आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
होसी हांसी सब मेयराजमें, जिनको नहीं सुमार।।७८ ।।

अपनी बारह हजार रूहों को अपने दिल में लेकर सिंहासन पर बैठे। आखिर में जब आमने-सामने (रू-बरू) मिलेंगे तो बेशुमार हंसी होगी।

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन।।७९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और रूहों ने मिलकर वायदा किया था कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा हूं और हमने बेशक कहा था, वहां मूल-मिलावा के उन वचनों को याद करो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

इलम लदुन्नी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने इस वास्ते दुनियां बनाई और फिर हमको जुदाकर खेल में जुदाई दिखाई। बाद में आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमें अपने को सेहेरग से नजदीक बताया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें।। २ ।।

अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को नहीं थी। उस परमधाम के परदे खोलकर हमें सेहेरग से नजदीक दिखाया।

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान।। ३ ।।

संसार के जाहिरी लोगों की नजर ऊपर के सात आसमान (बैकुण्ठ) तक ही सीमित है। श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। उन्हें छोड़कर सब निराकार के पूजक बने हैं।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर।। ४ ।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात्रि में खेल में उतरीं। उन रूहों के बीच श्री श्यामाजी महारानी को सिरदार (प्रमुख) बनाकर भेजा।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत।
खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत।। ५ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान लाईं। श्री राजजी की हकीकत बताई। उन्होंने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अर्शों के सब भेद और राजजी महाराज के मारफत का ज्ञान देकर अन्धकार मिटाकर ज्ञान का दिन जाहिर किया।

Nijanand App

उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन।
सो ढूंढ़ें हक सहूरसे, अर्स रूहें मोमिन।। ६ ।।

रूहें जिनके हुकम से खेल देखने के वास्ते उतरी हैं, वह परमधाम के मोमिन अब विचार करके श्री राजजी महाराज को ढूंढ़ रहे हैं।

लेवें सब साहेदियां, हदीसे महंमद।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सब्द।। ७ ।।

वह सब मुहम्मद साहब की हदीसें, कुरान की आयतों की सूरतों से छिपे रहस्यों की गवाहियां लेंगी।

लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन।
समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन।। ८ ।।

आयतों और हदीसों में श्री राजजी महाराज के वचन लिखे हैं। जिन्हें वह रूहें समझेंगी जिनके परमधाम में मूल तन (परआतम) बैठे हैं।

इसारतें और रमूजें, लिखे कई किस्से निसान।
सो ए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान।। ९ ।।

परमधाम की इशारतें और रमूजें कई किस्सों में लिखी हैं। जिन्हें तुम हदीसों से, कुरान की आयतों से जान सकोगे।

करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार।
बिन मोमिन बिन लदुन्नी, करे सो कौन विचार।। १० ।।

यह सभी किताबें परमधाम की बातों को जाहिर करती हैं, परन्तु मोमिन और तारतम ज्ञान के बिना कौन समझ सकता है?

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन।
जो नूर बिलंद से उतरीं, दरगाही रूहें मोमिन।। ११ ।।

जो परमधाम के मोमिन हैं और खेल में उतरे हैं, उनके बिना और कोई नहीं समझ सकता।

नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल।
साल सत्तर ढांप्या रह्या, आगूं चल्या महंमदी मिल।। १२ ।।

तारतम ज्ञान की कुंजी सम्वत् १६७८ में आने के बाद ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी का अमल सत्तर साल तक (सम्वत् १७४२ तक) ढंपा रहा। प्रचार-प्रसार नहीं हुआ। वाणी धीरे-धीरे उतरती रही और फिर सम्वत् १७४८ में मारफत सागर का ज्ञान उतरने के बाद बसरी और मलकी सूरत का ज्ञान हकी सूरत से जाहिर हो गया।

आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत।
अव्वल आखिरी इलमें, जाहेर करी कयामत।। १३ ।।

अव्वल का ज्ञान कुरान तथा आखिर का ज्ञान तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने अपने वायदे के अनुसार आकर सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर कयामत को जाहिर किया।

Nijanand App

एही बका अर्स की, हक करें हिदायत।
खोली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत।। १४ ।।

परमधाम की रूहों के वास्ते श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावा की हकीकत बताई। यही अखण्ड परमधाम के मोमिन हैं, जिनको श्री राजजी महाराज समझा रहे हैं।

लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत।
हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत।। १५ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में मोमिनों की हकीकत लिखी है। ज्ञान का सवेरा मारफत सागर का ज्ञान आने में जो देरी हुई, उस देरी का कारण परमधाम की खिलवत, परिकरमा, सागर और सिनगार की वाणी उतरना था।

खोल बका अर्स मोहोलात, और बाग हौज जोए।
मोमिन देखें जिमी जंगल, पसु पंखी सोए।। १६ ।।

इस वाणी के उतरने से परमधाम के महल, बगीचे, हौज कौसर, ताल, जमुनाजी, जमीन, जंगल, पशु, पक्षी, सभी को मोमिन देखने लगे।

सूरत आतेना–कलकौसर, लिखी आम सिपारे।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे।। १७ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में आतेना कलकौसर की सूरत लिखी है। दीन-ए-मुहम्मदी के मानने वालो! आओ, उसको देखो। अक्षर के पार परमधाम का वर्णन है।

कह्या होसी जाहेर, अर्स रूहें मोमिन।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अर्स रोसन।। १८ ।।

इसमें कहा है कि परमधाम के रूह मोमिन संसार में जाहिर होंगे। वह परमधाम से खेल में उतरे हैं और वही परमधाम की सारी जानकारी देंगे।

जो कह्या महंमदें, लैल मेयराज माहीं।
सोई कौल रूहअल्ला ने, कहे रूहों के तांईं।। १९ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात की जो बातें बताई थीं, वही बातें श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रूहों को बताईं।

जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई।
तब मेरे दिल अर्स में, जरा सक ना रही।। २० ।।

जब रसूल साहब और श्री श्यामाजी महारानी दोनों मर्दों ने एक ही बात बताई, तब मेरे अर्श दिल में किसी तरह का संशय नहीं रहा।

तो इन रूहों मोमिनों, दिल अर्स केहेलाया।
जो हक इलम लदुन्नी, मेरे दिल आगूं ही आया।। २१ ।।

संशय मिट जाने पर रूह मोमिनों के दिल को जो अर्श कहा है, उसकी पहचान हो गई। अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मेरे हृदय में आ गया।

Nijanand App

तब कह्या हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन।
तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन।। २२ ।।

जब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का दिन उग गया, तब सवेरा हो गया और जागृत बुद्धि के ज्ञान के सूर्य को मोमिनों ने जाहिर किया।

कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत।
रुहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत।। २३ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में जो वायदे किए थे, वह सब सत्य हुए। आगे भी सत्य होंगे। श्री श्यामाजी महारानी जो जागृत बुद्धि का ज्ञान लाई हैं, उसने सारे संसार में ज्ञान का उजाला कर दिया।

रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए।
सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए।। २४ ।।

श्री श्यामाजी परमधाम से सर्वश्रेष्ठ (न्यामत) तारतम ज्ञान लेकर आए हैं। इसके तेज को (प्रकाश को) अब कोई कैसे छिपा सकेगा?

हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर।। २५ ।।

इस निराकार के अंधेरे में ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है, जिससे आसमान और जमीन में सब जगह प्रकाश ही प्रकाश फैल गया।

ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम।
मार्‌या कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम।। २६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि के ज्ञान ने संसार की ऐसी हालत कर दी कि शैतान और कलियुग को मारकर समाप्त कर दिया, जो संसार में सभी को गुमराह करता था।

फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कह्या महंमद।
तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद।। २७ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था, वह सब बातें सत्य हुईं, इसलिए रूह अल्लाह श्री श्यामाजी ने दज्जाल (अज्ञान) को मार दिया।

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित होए हुए एक दीन।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन।। २८ ।।

अज्ञान के समाप्त होने से सब एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे और तब श्री श्यामाजी (ईसा रूह अल्लाह) श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान से सबको यकीन दिलाएंगे। उस समय कुरान की सभी बातें सत्य हैं और रसूल साहब की पैगम्बरी सत्य है, जाहिर हो जाएगा।

फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखिरत।। २९ ।।

रसूल साहब ने जो कुछ कहा था, सभी बातें अपने समय पर पूरी हुईं। अब रसूल साहब की बातें सत्य लगती हैं, क्योंकि समय आखिरत का आ गया है।

Nijanand App

कौल किए हक हादीने, माहें खिलवत रूहन।
सो दिल महंमद मोमिनों, हुआ पूर रोसन।। ३० ।।

परमधाम में रूहों से, श्री श्यामाजी से श्री राजजी ने जो वायदे किए थे, आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों के दिलों में उसकी पूरी जानकारी कर दी।

एक गिरो रूहें अर्स से, हुकमें आई जो इत।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत।। ३१ ।।

एक जमात रूहों की परमधाम से श्री राजजी के हुकम से यहां आई है। उसके वास्ते ही रसूल साहब कुरान का ज्ञान लेकर यहां आए हैं।

तिन रूहों के बीच में, रूहअल्ला सिरदार।
सो ए लिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार।। ३२ ।।

उन रूहों के बीच में श्री श्यामाजी महारानी सिरदार (प्रमुख) हैं। श्री राजजी महाराज ने यह बात कही थी जो हदीस में लिखी है।

सो ए करी जाहेर, रसूलें इत आए।
सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए।। ३३ ।।

रसूल साहब ने उसी बात को यहां आकर जाहिर किया। श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने भी आकर वही बातें मोमिनों को बताईं।

सो तो आया हक का, लदुन्नी इलम।
लिख्या दिल अर्स पर, मोमिनों बिना कलम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है, जो मोमिनों के दिलों में पहले से ही अंकित है, क्योंकि मोमिन अर्श के रहने वाले हैं। इनको अपने घर की सब बातों का पता है।

सो ए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे।
लिखियां आयतां जंजीरां, बयान न्यारे न्यारे।। ३५ ।।

कुरान के बाईसवें सिपारे की अलग-अलग आयतों में यह बात लिखी है। सब बातें किस्सों के रूप में अलग-अलग तरह से लिखी हैं।

जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए।
माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए।। ३६ ।।

यदि कुरान की आयतों की कड़ियों को मिलाकर देखोगे तो कुरान के छिपे रहस्यों का ज्ञान मिलेगा।

ऐसा अब लग कबहुं, हुआ नहीं रोसन।
सो हक हादी जानत, या जानें रूहें मोमिन।। ३७ ।।

आज दिन तक कभी भी ऐसा ज्ञान नहीं मिला। इसे श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिन ही जानते हैं।

Nijanand App

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए।
तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे।। ३८ ।।

जब श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान संसार में जाहिर हुआ, तब इस जागृत बुद्धि के ज्ञान ने मिटने वाली दुनियां को जन्म-मरण से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया।

ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए।। ३९ ।।

इन वचनों के बातूनी अर्थ जिनको दिल में अच्छे लगे, वही इन वचनों को सुनकर एक पारब्रह्म के पूजक बने और निजानन्द सम्प्रदाय में आ गए।

बका अर्स हक सूरत, हुआ नूर रोसन।
सो ए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम, उनका स्वरूप और सारी बातों का ज्ञान अपने समय पर जाहिर हो गया। इसी बात को रसूल साहब ने कुरान में फर्दा-रोज के दिन खुदा आएगा, लिखा है।

जो कलाम अल्लाह में, फुरमाई फजर।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर।। ४१ ।।

कुरान में जिसे सवेरे का ज्ञान बताया था, श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के उस ज्ञान से मेरी नजर खुल गई और बातूनी भेद खुल गए।

हुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला।
बहत्तर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला।। ४२ ।।

खासल-खास रूह मोमिनों का मेला हुआ। यह मुहम्मद साहब के बहत्तर फिरकों से अलग नाजी फिरका कहलाया।

जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिन मोमिनों के वास्ते आयतों और हदीसों में हिदायतें (सिखापन) लिखी हैं, उन्हीं को ही श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया। यही नाजी फिरका है।

सोई मोमिन अर्स के, उतरे नूर बिलंद।
ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद।। ४४ ।।

यही वह मोमिन हैं जो परमधाम से खेल में उतरे हैं। जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इन मोमिनों को झूठ की पूजा और फरेबी माया के संसार के फन्दे से मुक्त कराया।

हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अर्स लज्जत।। ४५ ।।

अब इन मोमिनों को श्री प्राणनाथजी की पूरी मदद मिल गई है। यह दुनियां में बैठकर भी परमधाम और श्री राजजी महाराज के सुखों का आनन्द लेते हैं।

Nijanand App

नाहीं मोमिनों कबहुं, दुनियां का दिमाक।
जाको हक इलमें, किए सबों को पाक।। ४६ ।।

मोमिनों को कभी दुनियांवी शक्ति का अहंकार, घमण्ड नहीं होगा। इनको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने पाक-साफ कर दिया है।

ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अर्स दिल।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अर्स निरमल।। ४७ ।।

यह जो मोमिन हैं, इनका दिल हकीकी कहा है, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने इन्हीं के दिल को अपना अर्श कहा है। यह परमधाम की आत्माएं हैं जो हमेशा ही पाक-साफ हैं।

सिपारे सत्ताईसमें, लिख्या नीके कर।
सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अर्स दिल धर।। ४८ ।।

कुरान के सत्ताईसवें सिपारे में अच्छी तरह स्पष्ट लिखा है। इसलिए हे मोमिनो! तुम अर्श दिल में विचारकर दृढ़ कर लेना।

अर्समें सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल।
तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती फल।। ४९ ।।

परमधाम में मोमिनों के असली तन हैं। उनके अखण्ड सुखों का आनन्द मोमिनों को मृत्युलोक में मिला।

और गिरो फरिस्तन की, मुतकी परहेजगार।
ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार।। ५० ।।

एक और जमात ईश्वरीसृष्टि, दुनियां से परहेज कर खुदाई इलम पर चलने वाले हैं। यह भी हमारे साथ लैल तुल कदर में तीनों ब्रह्माण्डों में आई हैं।

आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल-सरात।। ५१ ।।

बाकी तीसरी सारी दुनियां है जो जीवसृष्टि है। वह सब निराकार से पैदा है। यह कर्मकाण्ड को पकड़कर अपने शरीरों की पूजा में ही अटके पड़े हैं।

रूहें दिल हकीकी, कहे अर्समें तन।
अर्स जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमिन।। ५२ ।।

रूहों के दिल को हकीकी कहा है, क्योंकि इनके मूल तन (परआतम) परमधाम में हैं। जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है, वह यही मोमिन हैं।

लिखी इनों की बुजरकी, मुसाफ माहें सिफत।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत।। ५३ ।।

कुरान में इन मोमिनों की बड़ी महिमा गाई है। मुहम्मद साहब ने भी अपनी हदीसों में इनको बड़ा मान दिया है।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक।।५४।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें यह सब ज्ञान देकर समझाया है। अब आगे उन पैगम्बरों की हकीकत बताती हूं, जिन्होंने अपने-अपने फिरके चला रखे हैं और बड़े कहलाते हैं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १३३ ।।

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान।।१।।

कुरान के बीच में नारी (दोजखी) फिरकों का बयान है, जो बहत्तर फिरकों में बंटकर परेशान हो रहे हैं।

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस।।२।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में शैतान की सूरत का बयान है। वहां लिखा है कि जल, थल सबमें अबलीस समाया है। दुनियां इसको अपना परमात्मा मानती है।

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल।।३।।

कुरान में लिखा है कि जंगलों से नदियां बहेंगी। उसका अर्थ है कि शून्य हृदय जंगल (वीरान) की तरह है। उससे निराकार के उपासकों के नित्य नए-नए फिरके (धर्म) चलेंगे।

ए जो कहे बनी–आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा।।४।।

यह आदम की औलाद, जिसे आदमी कहा है, सब निराकार के ही पूजक हैं। इनका सम्बन्ध (शादी) दुनियां को माया की आग से जलाने वाले अबलीस से हुआ है।

कह्या गधा जो दज्जालका, ऊंचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान।।५।।

कुरान में लिखा है कि वह शैतान अबलीस का बड़ा लम्बा-चौड़ा गधा होगा जो आसमान तक ऊंचा होगा। यही सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करने वाला मोह तत्व है (वैराट का रूप है)।

तो दुनियां ताबे दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।
दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर।।६।।

सारी दुनियां इसी शैतान अबलीस (नारद) के अधीन है। यह सबके दिलों पर बैठकर बादशाही कर रहा है। यह झूठी दुनियां शैतान अबलीस के बिना एक पल भी नहीं चल सकती है। दुनियां मन के अधीन है। मन वही शैतान है।

Nijanand App